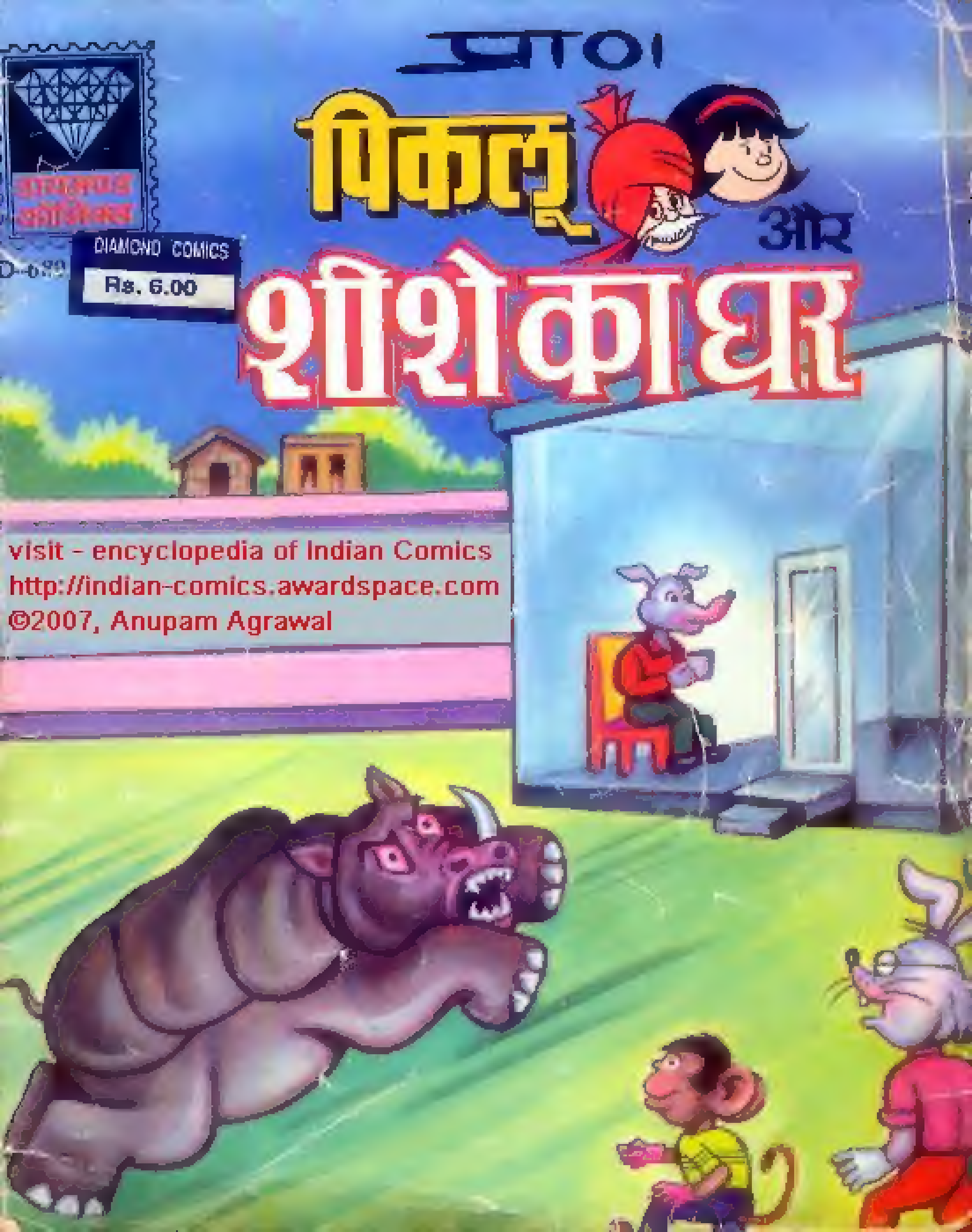
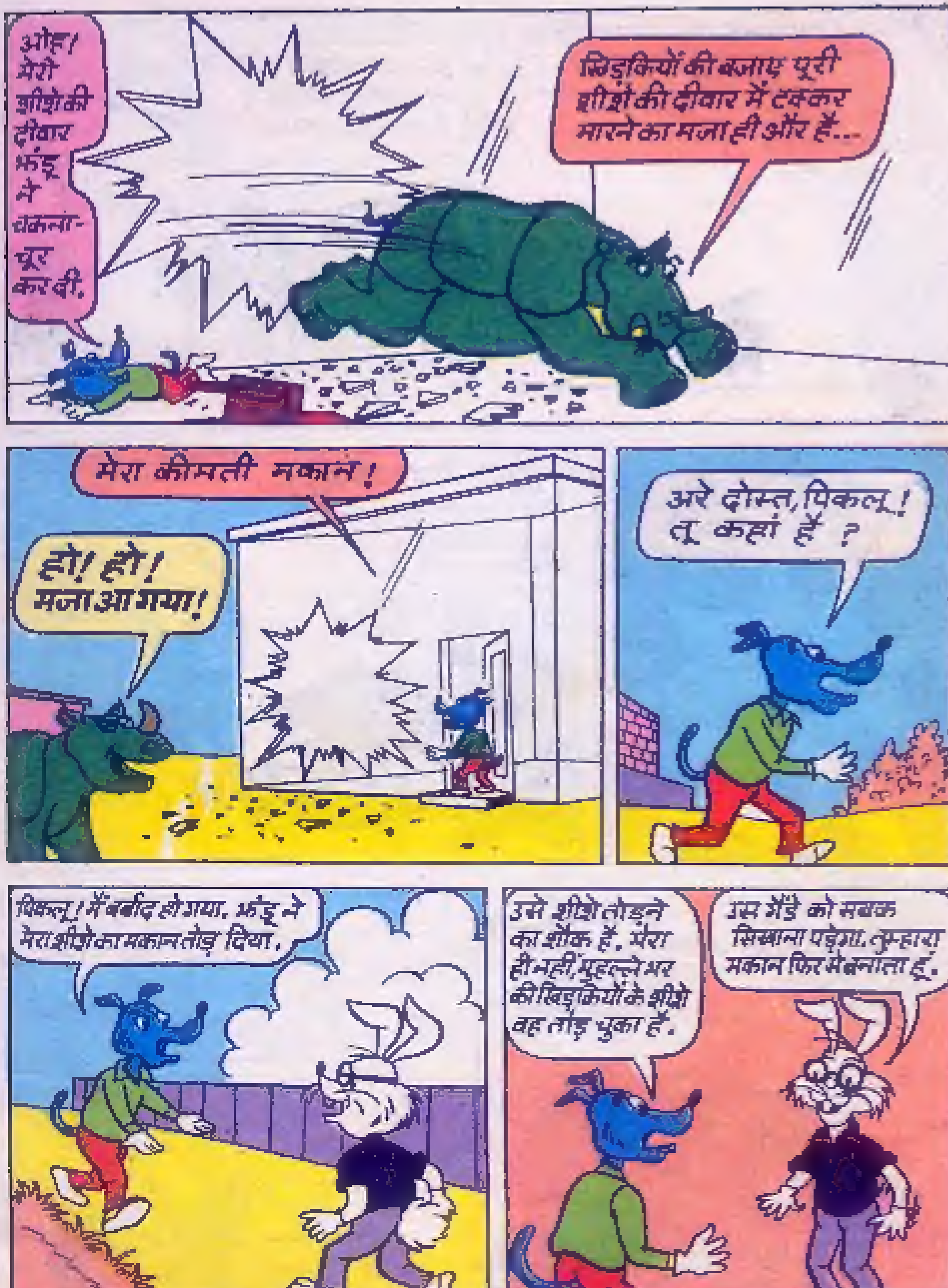
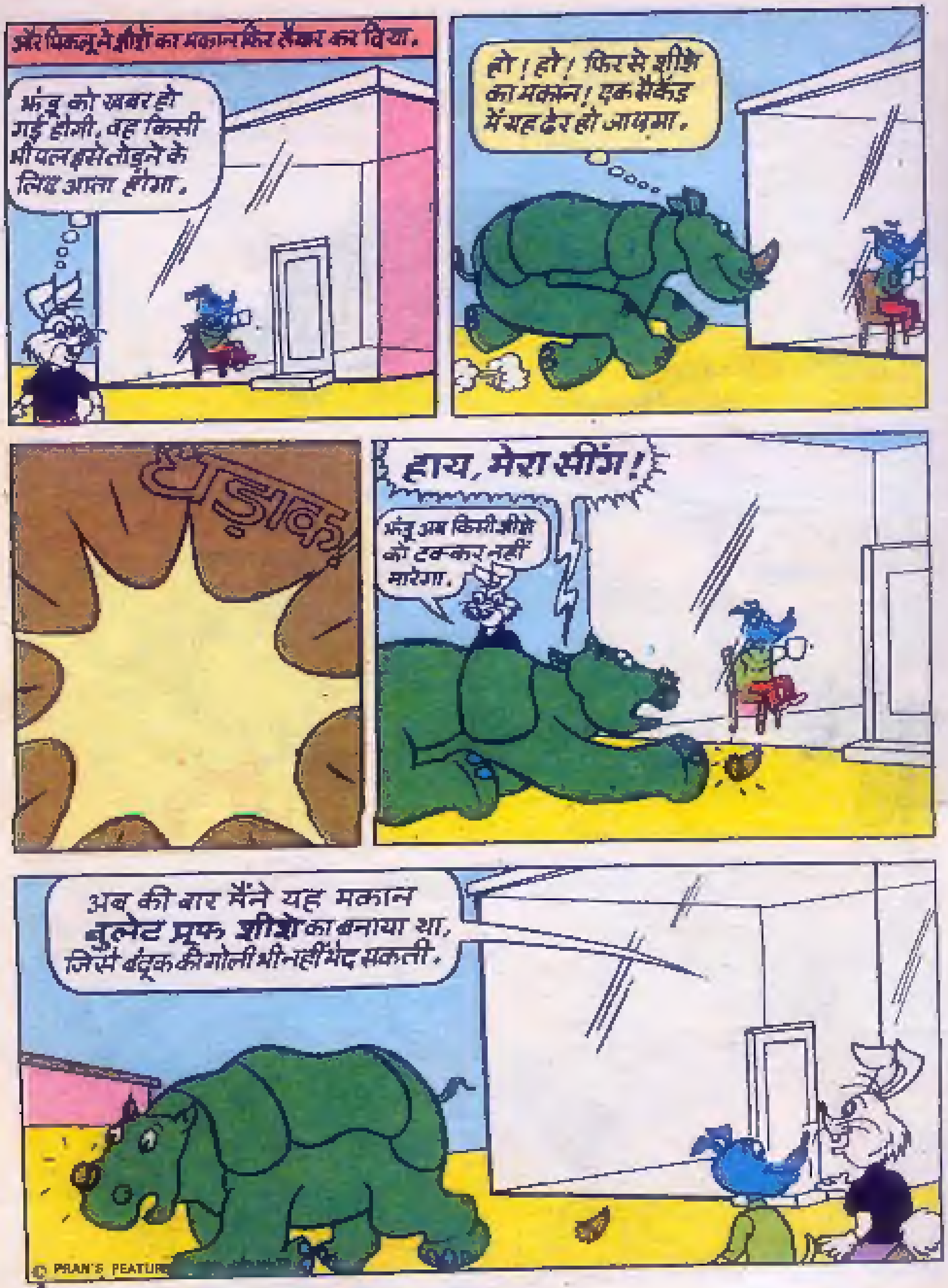

प्राण
पिकलू
और
शीशे का घर
DIAMOND COMICS
Rs. 6.00


शीशे का घर
अरे, रम्पू! तू तो मकान के अंदर बैठा भी बाहर से दिखाई दे रहा है!
टोंटू! मैंने यह शीशे का घर बनाया है. इसके अंदर रखी हुई हर चीज बाहर से दिखेगी.
अरे, हां! यह तो सचमुच बड़ी लाजवाब चीज है.
मैं इस नायाब चीज के बारे में सब दोस्तों को बताता हूं.
हपोर! रम्पू ने शीशे का मकान बनाया है, उसके आर-पार सब कुछ दिखता है!
P-12


टोंटू! तुम्हें इतने जोर से यह नहीं कहना चाहिए था.
क्यों?
यह बात झंडू गैंडे ने सुन ली है. जिस तरह लोगों को पान खाने का शौक होता है, झंडू को शीशे तोड़ने का शौक है.
वह देखो, उसने मेरे मकान की खिड़कियों के शीशे टक्कर मार-मार कर तोड़ रखे हैं.
अब रम्पू के घर को राम ही बचाए!
हो-हो! शीशे का मकान!
एक टक्कर और यह टुकड़े टुकड़े! हो-हो!
कड़ाक!

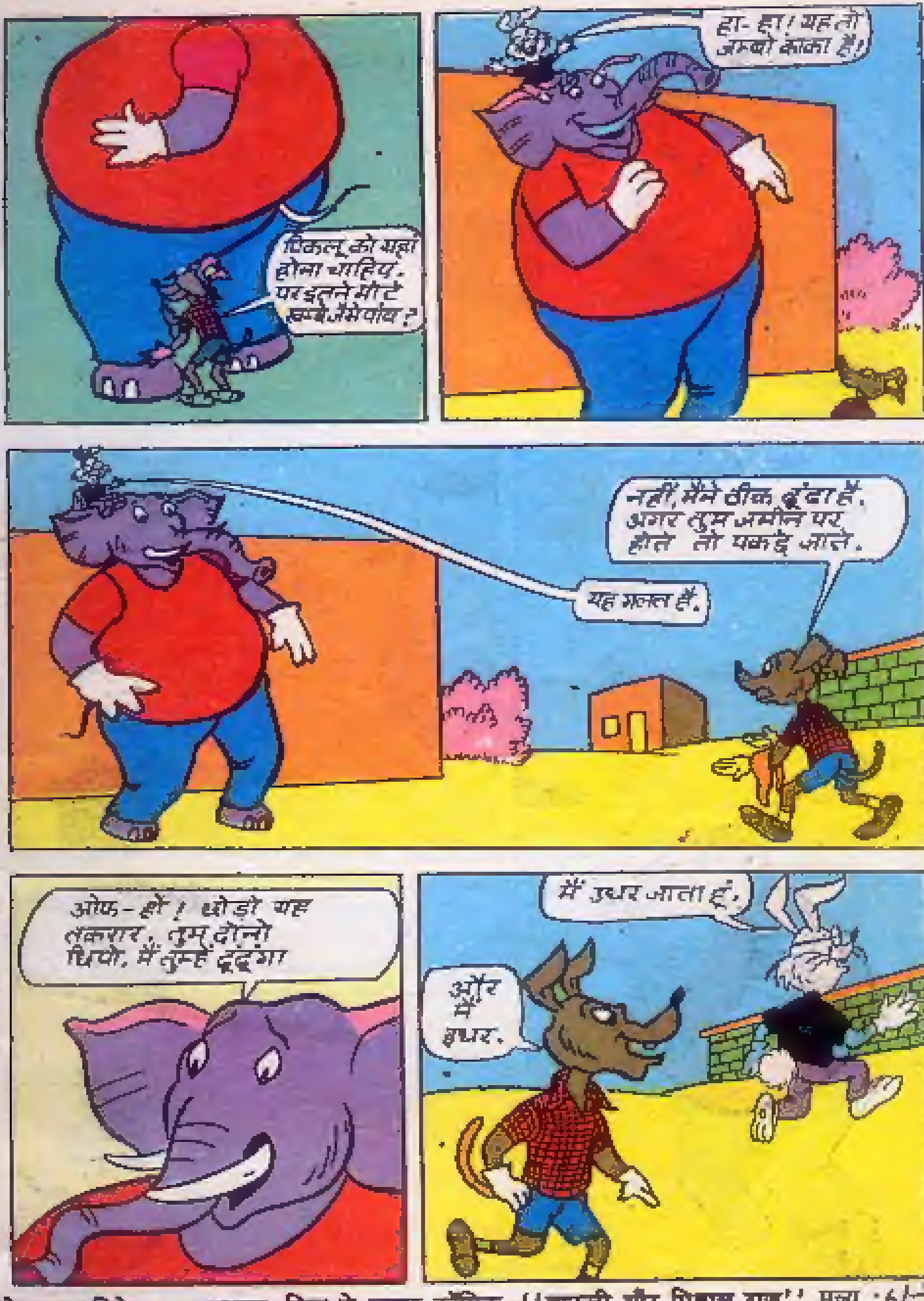

खिड़कियों की बजाए पूरी शीशे की दीवार में टक्कर मारने का मजा ही और है...
ओह! मेरी शीशे की दीवार झंडू ने चकना-चूर कर दी.
मेरा कीमती मकान!
हो! हो! मजा आ गया!
अरे दोस्त, पिकलू! तू कहां है ?
पिकलू! मैं बर्बाद हो गया. झंडू ने मेरा शीशे का मकान तोड़ दिया,
उसे शीशे तोड़ने का शौक है. मेरा ही नहीं, मुहल्ले भर की खिड़कियों के शीशे वह तोड़ चुका है.
उस मैंडे को सबक सिखाना पड़ेगा. तुम्हारा मकान फिर मैं बनाता हूं.


और पिक्लू ने शीशे का मकान फिर तैयार कर दिया.
झंडू को खबर हो गई होगी, वह किसी भी पल इसे तोड़ने के लिए आता होगा.
हो! हो! फिर से शीशे का मकान! एक सैकंड में यह ढेर हो जायगा.
हाय, मेरा सींग!
झंडू अब किसी शीशे को टक्कर नहीं मारेगा.
अब की बार मैंने यह मकान बुलेट प्रूफ शीशे का बनाया था, जिसे बंदूक की गोली भी नहीं भेद सकती.
© PRAN'S FEATURES



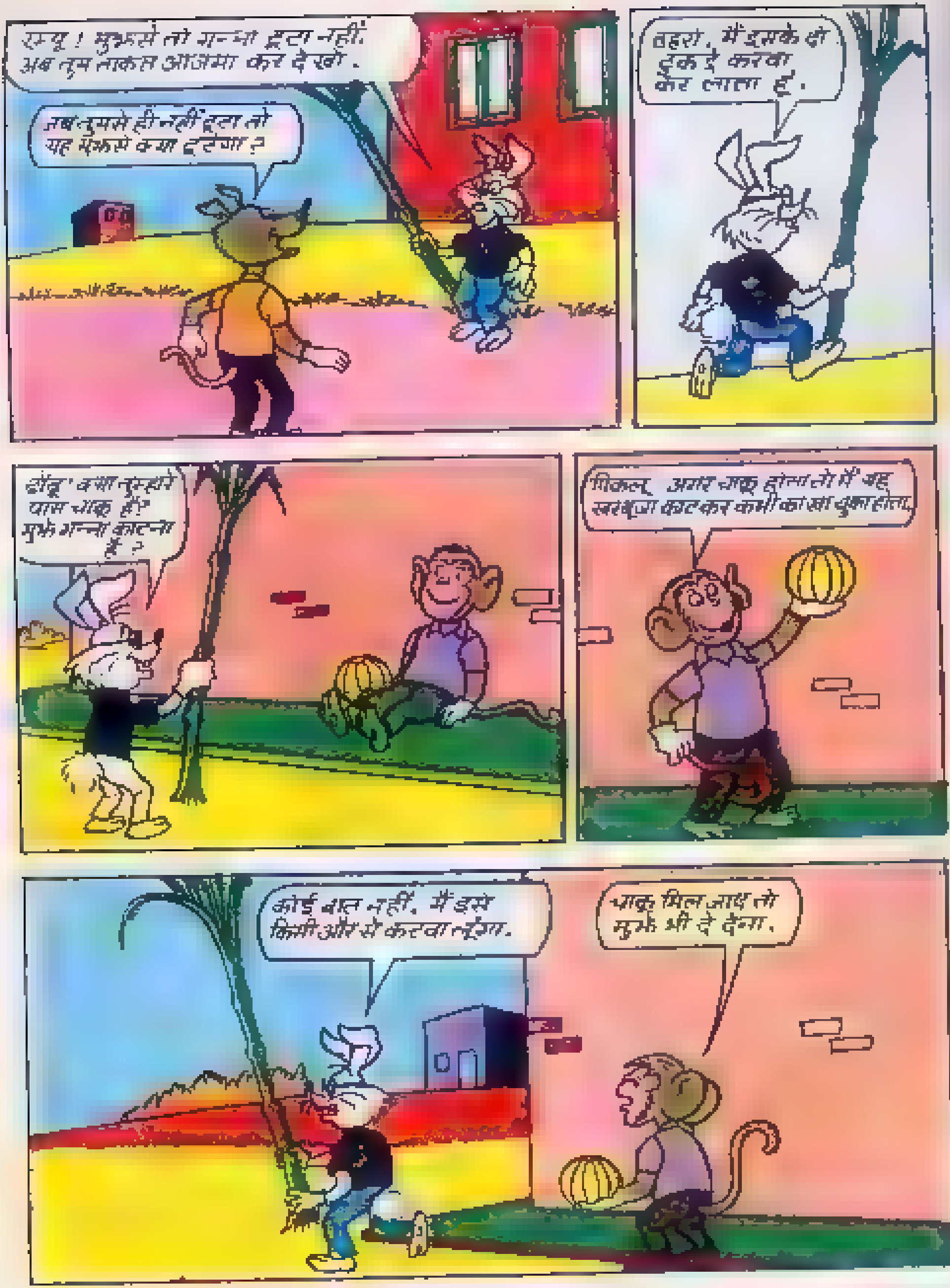
पिकलू का चश्मा
रम्पू ने कहा था कि स्कूल से छुट्टी होते ही आ जाना, दोनों खेलेंगे.
देखूं, पिकलू आ रहा है या नहीं. नजदीक दिखाई नहीं दे रहा.
उसके आने तक बैठ कर नाश्ता किया जाए.
रम्पू! तुमने खेलने के लिए बुलाया था. मैं आ गया.
लेकिन क्या खेलेंगे?
कैरम कैसा रहेगा?


नहीं, मुझे एक जगह बैठकर खेलने वाले खेल पसंद नहीं. लुकाछिपी कैसा रहेगा ?
ठीक है, पिकलू, तुम छिपो, मैं ढूंढूंगा.
आ जाऊं ?
अभी नहीं!
पिकलू, अब आ जाऊं ?
अभी नहीं !
रम्पू, आ जाओ !
इधर से आवाज आई थी.
उसकी गंध बाहर से आ रही है. हम कुत्तों में यही तो खूबी है कि सूंघ कर पता लगा लेते हैं.

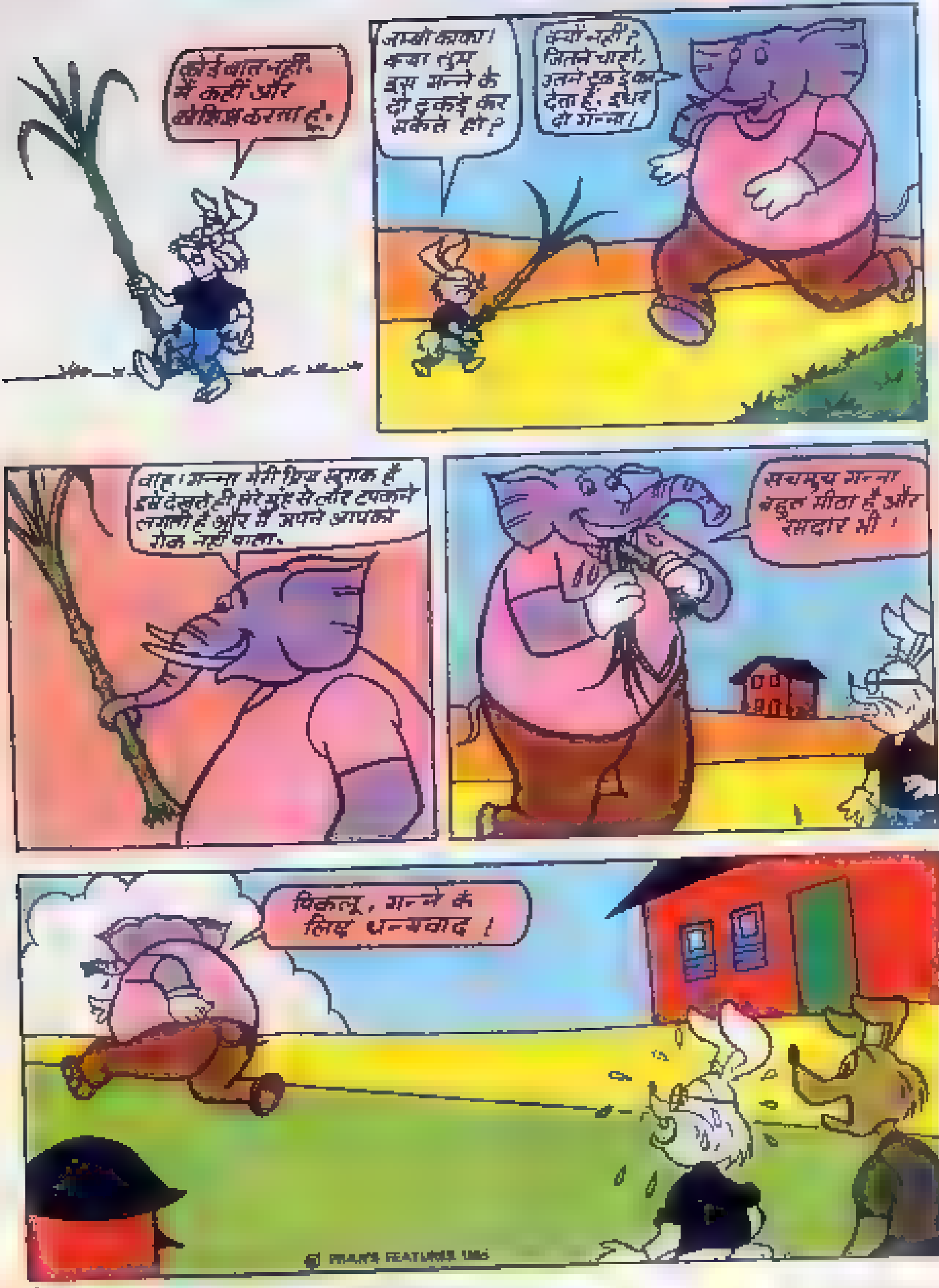

टिकलू को यहां होना चाहिए. पर इतने मोटे खम्बे जैसे पांव ?
हा-हा! यह तो जम्बो काका है!
यह गलत है.
नहीं, मैंने ठीक ढूंढा है. अगर तुम जमीन पर होते तो पकड़े जाते.
ओफ-हो! छोड़ो यह तकरार, तुम दोनों छिपो, मैं तुम्हें ढूंढूंगा
मैं उधर जाता हूं.
और मैं इधर.


आ जाऊं ?
आ जाऊं
ओह! मेरा चश्मा गिर गया!
अगर मैं चश्मा उठाने के लिए झुका तो जम्बो काका पकड़ लेंगे. इसे बाद में उठा लूंगा.
ह आं!
चिकलू! तुम रो क्यों रहे हो? मैंने तो तुम्हें अभी नहीं पकड़ा?
तुमने मेरा चश्मा तोड़ दिया.


गन्ना और जम्बो
अहा, गन्ना!
वाह! गन्ना!
रम्पू! यह गन्ना मेरा है.
नहीं, पिंकलू! पहले गन्ना मेरे हाथ में आया.
लड़ना ठीक नहीं. गन्ने के दो टुकड़े करते हैं. एक-एक टुकड़ा बाँट लेंगे.
अच्छा आइडिया है, इसे बीच में से तोड़ो.
आ... आह! पूरी ताकत लगा दी.


रम्पू ! मुझसे तो गन्ना टूटा नहीं. अब तुम ताकत आजमा कर देखो .
जब तुमसे ही नहीं टूटा तो यह मुझसे क्या टूटेगा ?
ठहरो , मैं इसके दो टुकड़े करवा कर लाता हूं .
डोंटू ' क्या तुम्हारे पास चाकू है? मुझे गन्ना काटना है ?
पिंकल, अगर चाकू होता तो मैं यह खरबूजा काटकर कभी का खा चुका होता.
कोई बात नहीं, मैं इसे किसी और से कटवा लूंगा.
चाकू मिल जाए तो मुझे भी दे देना.


मिन्टी क्या तुम्हारे पास चाकू है? मुझे यह गन्ना काटना है.
मैं सारी चीजें अपने दांतों से कुतरती हूं. तुम्हारा गन्ना भी कुतर कर दे सकती हूं, लेकिन शाम हो जाएगी
मेरे पास इतना धैर्य नहीं. हमें गन्ना जल्दी खाना है किसी और से पूछता हूं.
शेरखां! इस गन्ने के दो टुकड़े कर देना
काश मैं ऐसा कर सकता!
क्यों? तुम्हारे हाथों में तो इतनी ताकत है कि बड़ों बड़ों की गर्दन मरोड़ सकते हो!
काश! मैं हाथ इस्तेमाल कर सकता!
मेरी बीवी मायके गई हुई है. खाना बनाते समय मैंने अपने दोनों हाथ जला लिए.

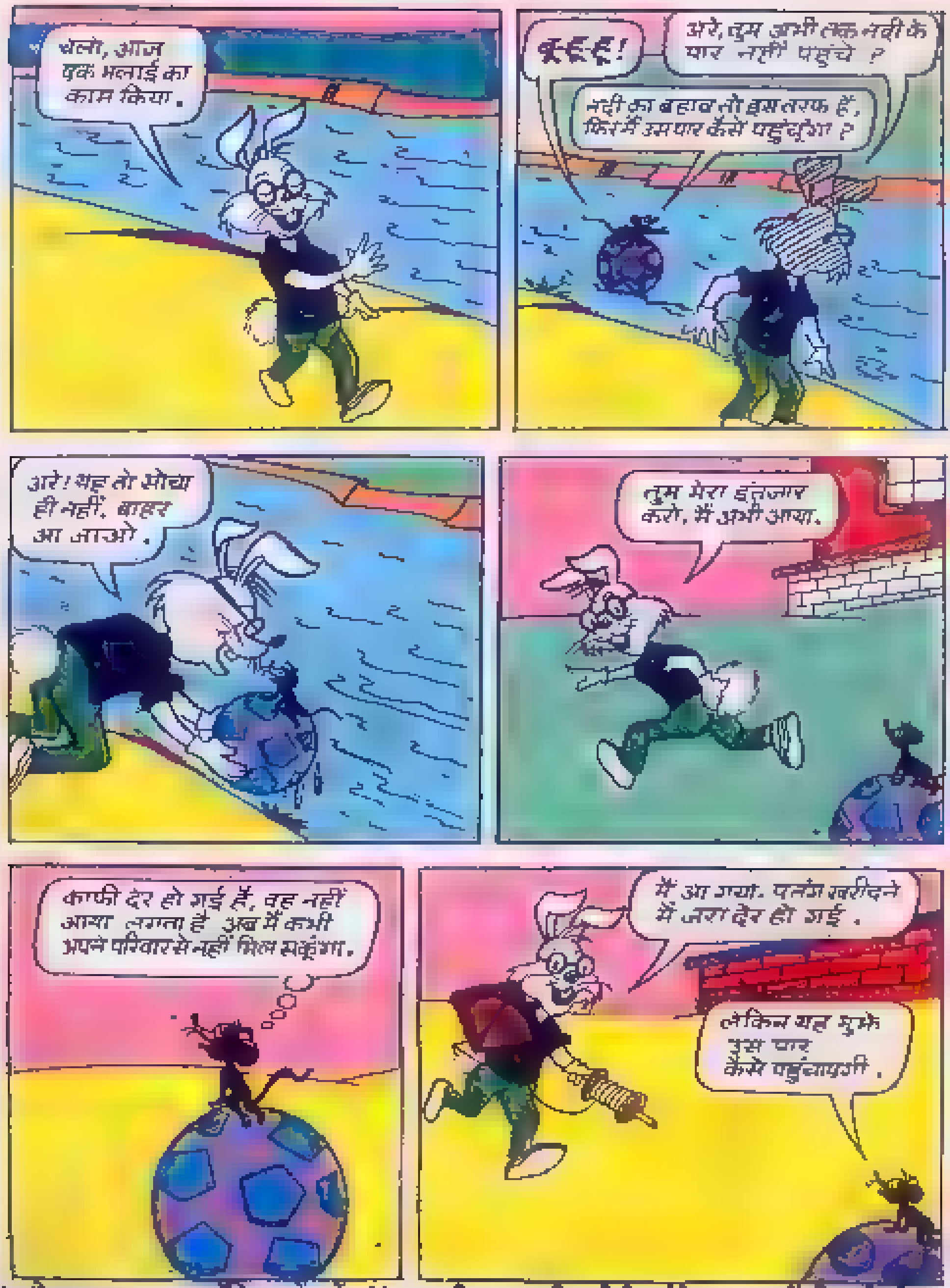

कोई बात नहीं. मैं कहीं और कोशिश करता हूं.
जम्बो काका! क्या तुम इस गन्ने के दो टुकड़े कर सकते हो?
क्यों नहीं? जितने चाहो, उतने टुकड़े कर देता हूं. इधर दो गन्ना!
वाह! गन्ना मेरी प्रिय खुराक है इसे देखते ही मेरे मुंह से लार टपकने लगती है और मैं अपने आपको रोक नहीं पाता.
सचमुच गन्ना बहुत मीठा है और रसदार भी!
पिकलू, गन्ने के लिए धन्यवाद!



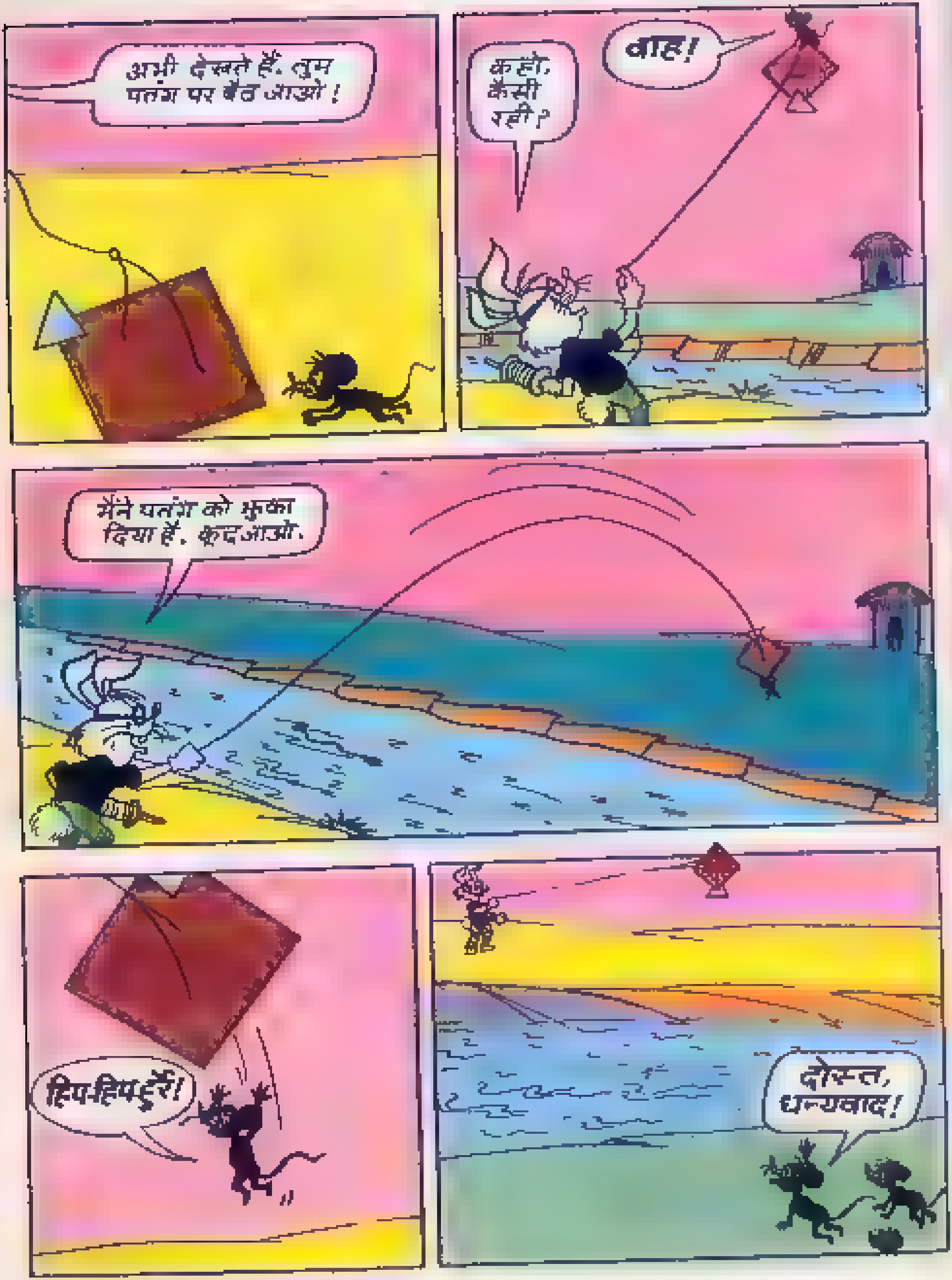
डायमण्ड कामिक्स में अग्निपुत्र और अभय का आगामी आकर्षण ''अग्निपुत्र अभय और डैगाल'' । 5



फिक्र न करो इस फुटबाल पर बैठ कर तुम नदी पार कर सकते हो.
इससे कुछ नहीं होगा मैंने कई पत्थर नदी में फेंके..
और सब डूब गए इसी तरह तुम्हारी फुटबाल भी पानी में डूब जाएगी और साथ में भी.
नहीं विज्ञान का सिद्धांत है कि भारी चीज पानी में डूब जाती है हल्की तैरती रहती है. इस फुटबाल में हवा भरी है जो पानी से हल्की होती है. इस लिए यह तैरता रहेगा
आओ, इस पर बैठ जाओ.
?
कहो, कैसी रही?
बहुत अच्छी.



चलो, आज एक भलाई का काम किया.
कू-ऊ-ऊ!
अरे, तुम अभी तक नदी के पार नहीं पहुंचे ?
नदी का बहाव तो इस तरफ है, फिर मैं उस पार कैसे पहुंचूंगा ?
अरे! यह तो सोचा ही नहीं, बाहर आ जाओ.
तुम मेरा इंतजार करो, मैं अभी आया.
काफी देर हो गई है, वह नहीं आया लगता है अब मैं कभी अपने परिवार से नहीं मिल सकूंगा.
मैं आ गया. पतंग खरीदने में जरा देर हो गई.
लेकिन यह मुझे उस पार कैसे पहुंचाएगी.

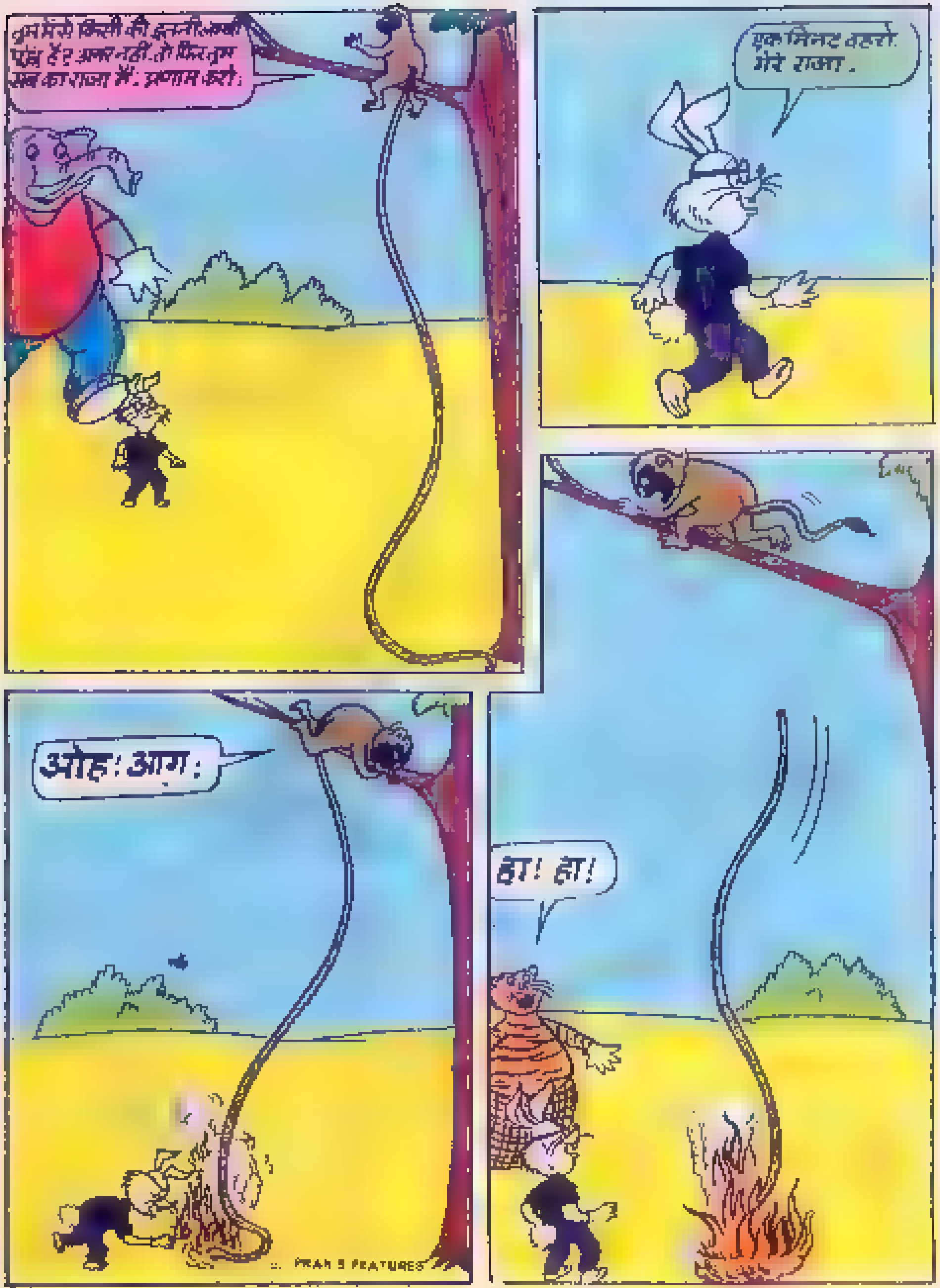

अभी देखते हैं. तुम पतंग पर बैठ आओ!
कहो, कैसी रही?
वाह!
मैंने पतंग को झुका दिया है. कूद आओ.
हिप-हिप हुर्रे!
दोस्त, धन्यवाद!

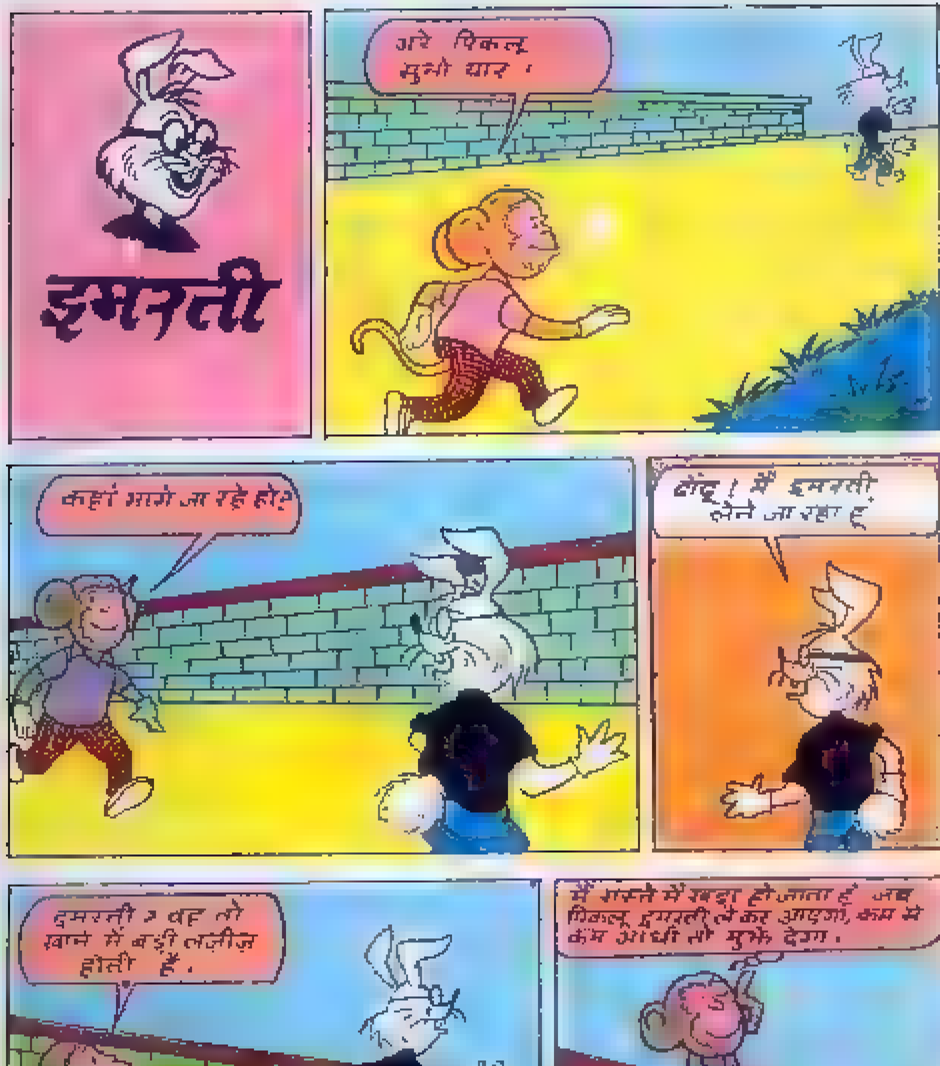


अपनी पूंछ
पिंकलू, देखो मेरी पूंछ कितनी सुन्दर है.
हीं हीं गोल पूंछ ज्यादा सुन्दर होती है. जैसी मेरी
और मेरी लहराती मुलायम पूंछ न सिर्फ खूबसूरत है बल्कि पंखे की तरह हवा भी करती है
ठहरो! एक पूंछ सम्मेलन करते हैं जिसकी पूंछ सबसे अच्छी होगी उसे राजा घोषित करेंगे.
पूंछ सम्मेलन
और सम्मेलन में भाग लेने के लिए दूर दूर से उम्मीदवार आने शुरू हो गए
P-15


सज्जनों मेरी पूंछ न सिर्फ मजबूत और सुडौल है बल्कि रंगबिरंगी भी है. इसलिए राजा मुझे चुनो
हां हां पूंछ एक मुसीबत है मुसीबत जितनी छोटी हो उतना अच्छा इसलिए मेरी दुम छोटी है.
कौन गधा कहता है कि छोटी दुम अच्छी होती है? मेरी पूंछ न सिर्फ खूबसूरत है बल्कि मक्खियां उड़ाने में लाजवाब है
मेरी पूंछ पर कहावतें रची गई हैं. कुत्ते की तरह दुम हिलाना कुत्ते की दुम टेढ़ी की टेढ़ी. वगैरह.
यह सारी बातें फिजूल हैं दुनिया में एक मात्र मेरी ही दुम है जिस में गांठ लगी है.

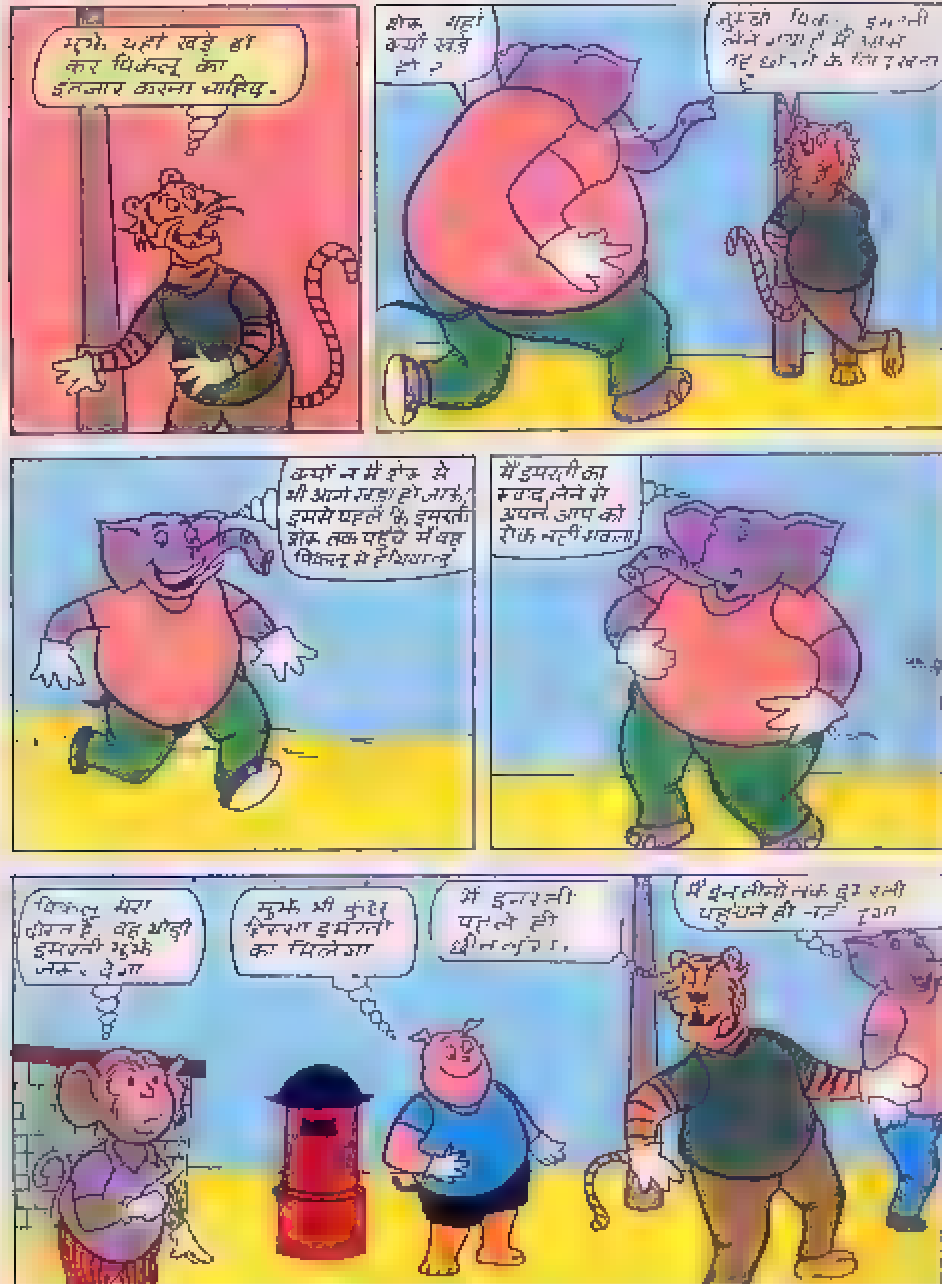

सिर्फ मेरी दुम ही ऐसी है जो मखमल की तरह मुलायम और घटाओं की तरह काली है
अरे फिजूल की बातें छोड़ो अच्छी पूंछ वह जो उपयोगी हो- देख मेरे
अपनी कांटेदार पूंछ से कई बार मैंने शिकार फांसे हैं
बस: काफी हो गया!
अनमोल चीज वही होती है जो सारे जहान में अद्वितीय हो


तुम में से किसी की इतनी लम्बी पूंछ है? अगर नहीं. तो फिर तुम सब का राजा मैं. प्रणाम करो.
एक मिनट ठहरो. मेरे राजा.
ओह! आग!
हा! हा!
PRAN'S FEATURES



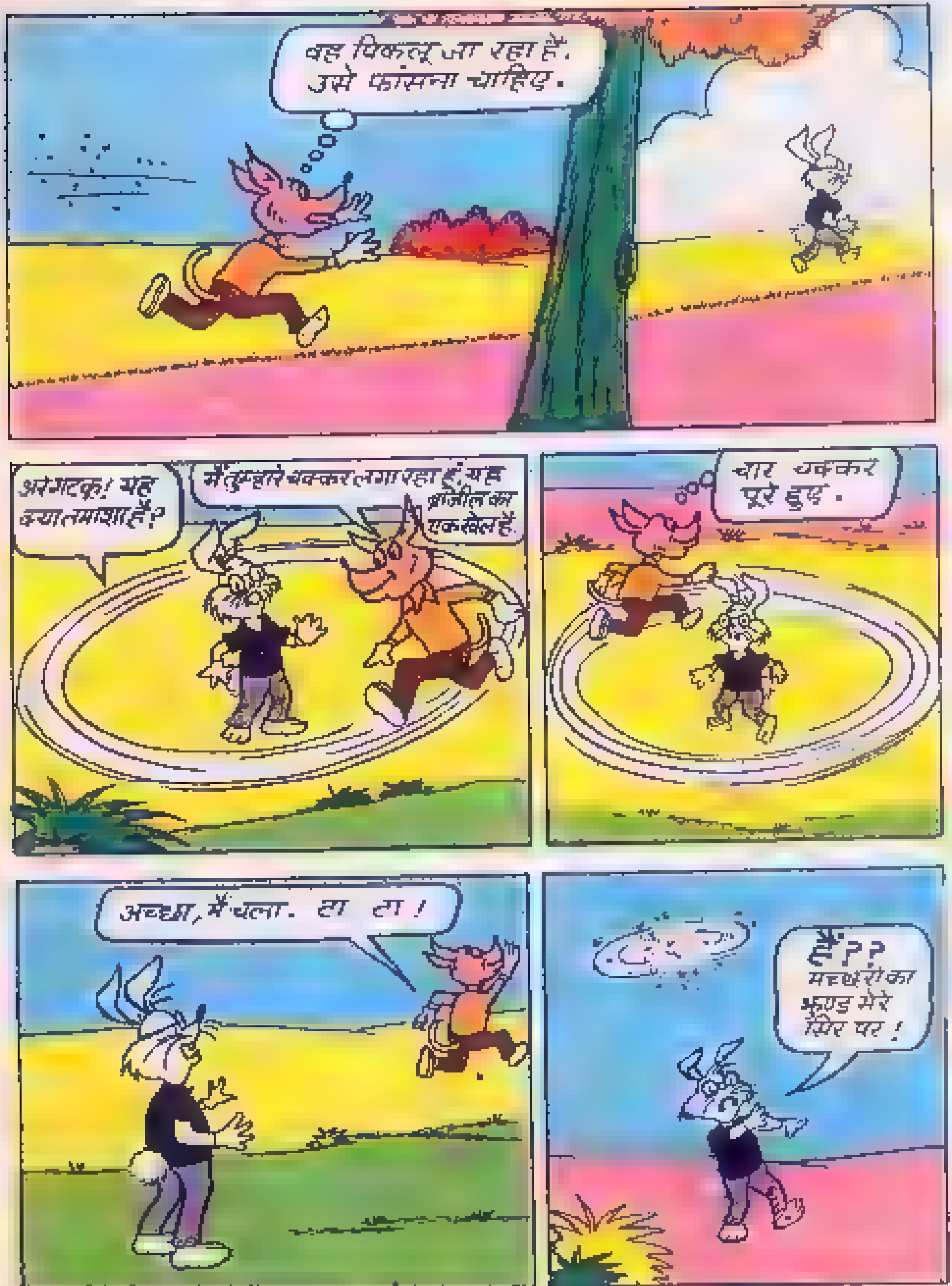
डायमण्ड कॉमिक्स में अगले माह पढ़िये 'चाचा चौधरी' का गोल्डन जुबली कॉमिक्स ''चाचा


अरे ढोंढू, यहां क्यों खड़ा है?
पिकलू इमरती लेने गया है मुझे भी आधी मिल जाएगी।
इमरती! वाह, वह तो मुझे बड़ी अच्छी लगती है।
यहां क्यों खड़े हो?
ठीक! पिकलू इमरती लेने गया है जब वह लौटकर आएगा तो मुझे भी उसमें से कुछ हिस्सा मिल जाएगा।

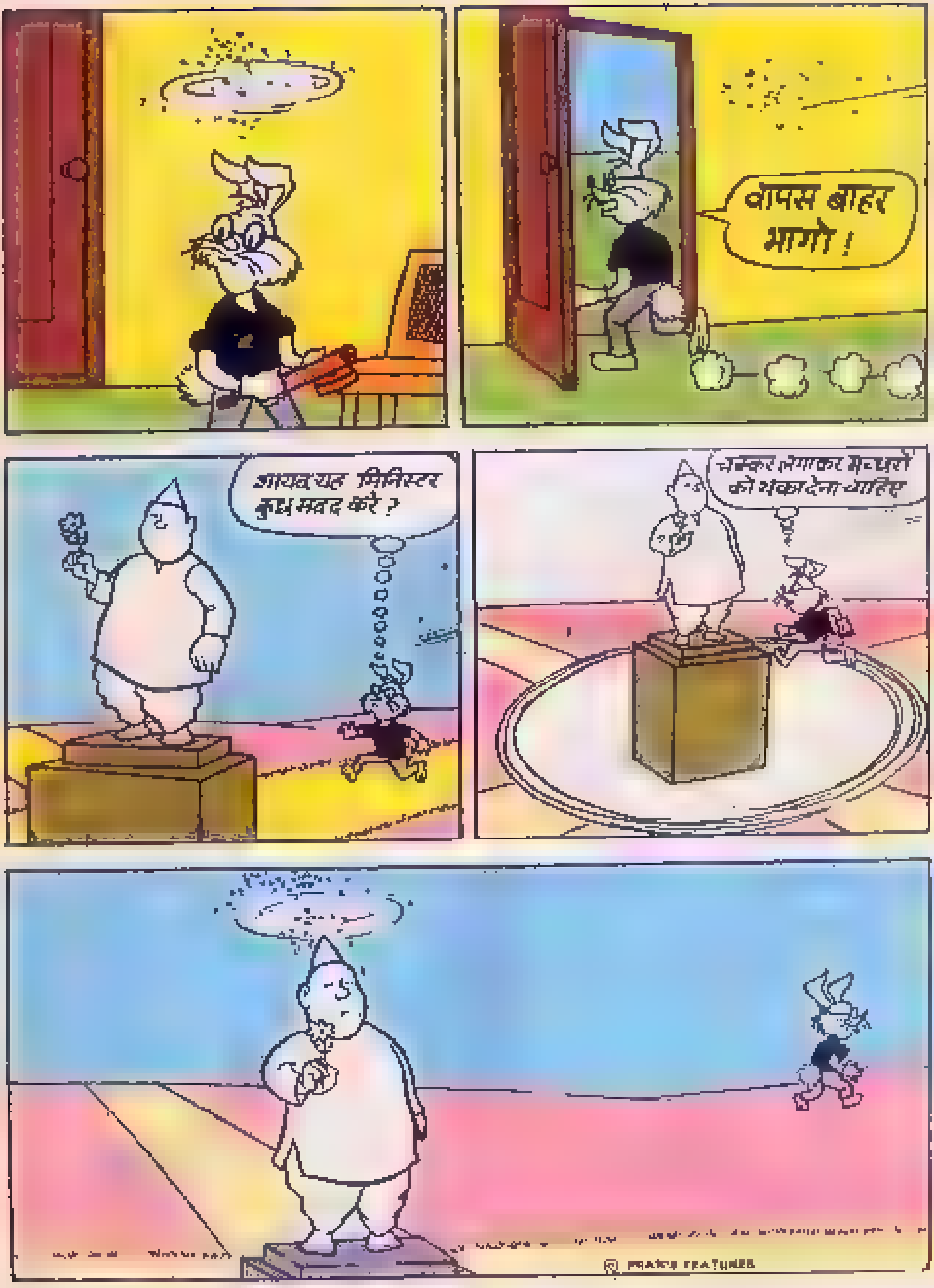

मुझे यहीं खड़े हो कर पिंकलू का इंतजार करना चाहिए.
शेरू यहाँ क्यों खड़े हो ?
क्यों न मैं शेरू से भी आगे खड़ा हो जाऊं, इससे पहले कि इमरती शेरू तक पहुँचे मैं वह पिंकलू से हथिया लूं
मैं इमरती का स्वाद लेने से अपने आप को रोक नहीं सकता


क्या बात है? अभी तक पिकलू इमरती ले कर नहीं आया?
वह बड़ी ज़्यादा देर लगा रहा है.
पिकलू आ गया! मैं उसे देख सकता हूँ.
लेकिन उसके हाथ में कुछ नहीं है।
मैं अपने दोस्त इमरतीलाल को लेने गया था.


मच्छरों का झुंड
ओह! कमबख्त मच्छरों का यह झुण्ड काफी देर से सिर पर मंडरा रहा है
रम्पू दादा! यह मच्छरों का झुण्ड मेरा पीछा ही नहीं छोड़ रहा.
ब्राजील के लोग एक खेल करते हैं. जिसके सिर पर मच्छर मंडराते हैं वह किसी दूसरे के इर्द-गिर्द चार चक्कर लगाता है. मच्छर दूसरे के हवाले हो जाते हैं.
मटरू तुम भी ऐसा करो पर दूसरा आदमी मुझे मत बना लेना. समझे?
मैं कोशिश करता हूं.
P 20


वह निकल जा रहा है.
उसे फांसना चाहिए.
अरे गटकू! यह क्या तमाशा है?
मैं तुम्हारे चक्कर लगा रहा हूं, यह ग्राजील का एक खेल है.
चार चक्कर पूरे हुए.
अच्छा, मैं चला. टा टा!
हैं??
मच्छरों का झुण्ड मेरे सिर पर!


बाप रे, भागो!
गनीमत है, घर करीब ही है
सारे दरवाजे खिड़कियां बंद कर देनी चाहिए अब वे कैसे अंदर घुसेंगे?
ये कमबख्त ऐसे नहीं मानेंगे मच्छर मारने की दवाई लाता हूं.
तुम्हारी जगह जहन्नुम में ही है


वापस बाहर भागो !
शायद यह मिनिस्टर कुछ मदद करे ?
चक्कर लगाकर मच्छरों को चकमा देना चाहिए
© PRAN'S FEATURES



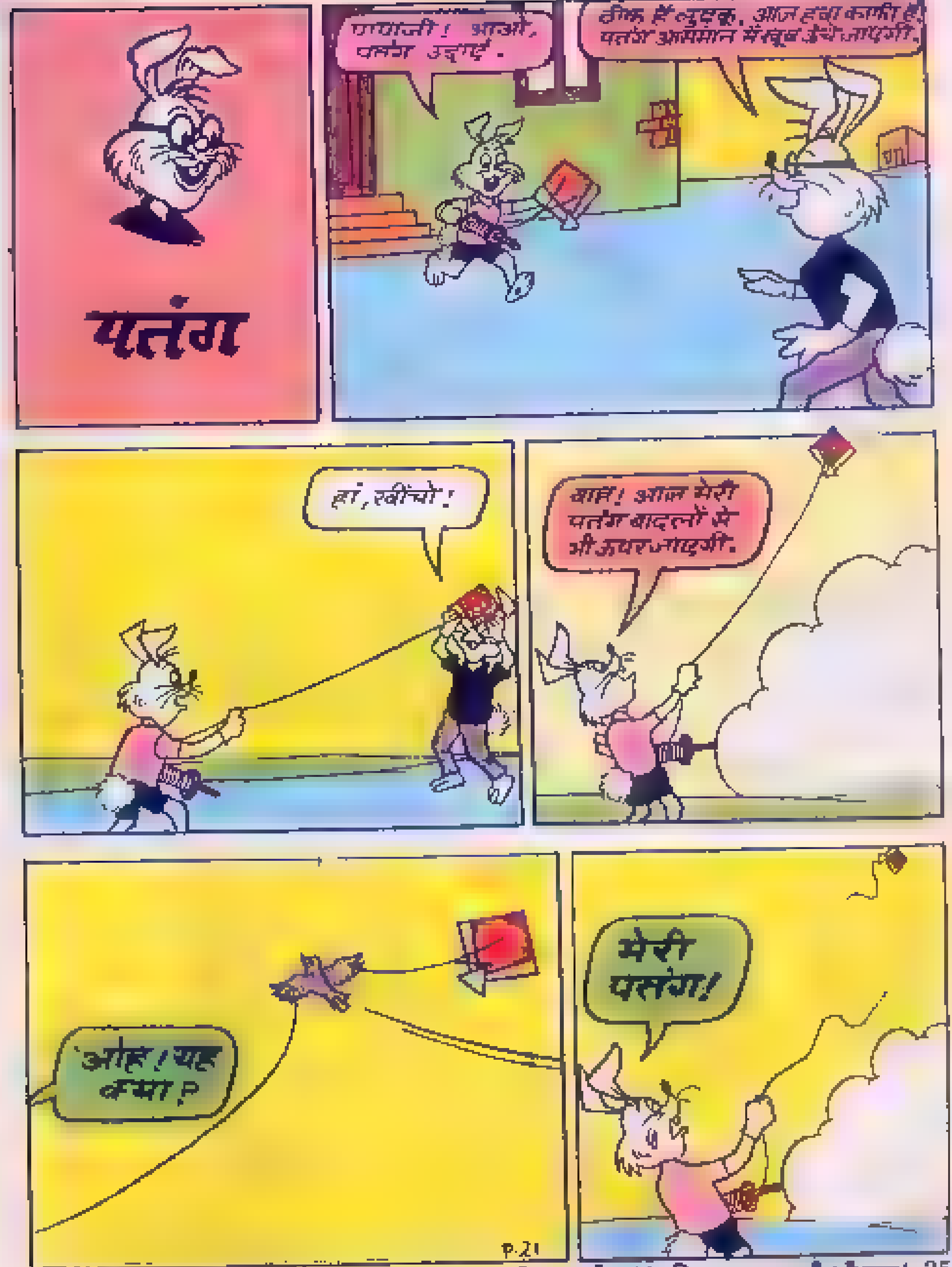
''राजन इकबाल और प्रेतों का आतंक'' मूल्य 6/-

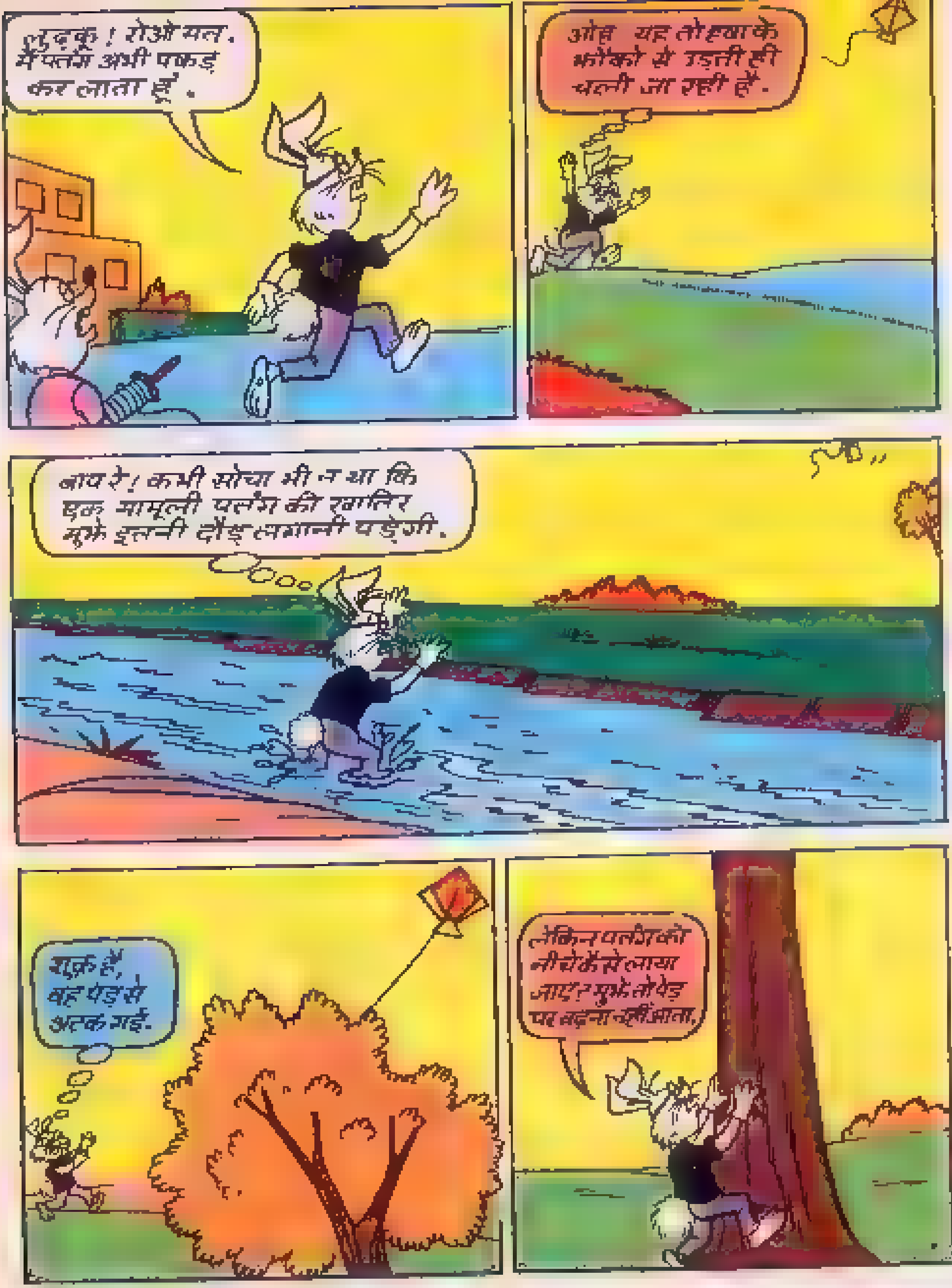


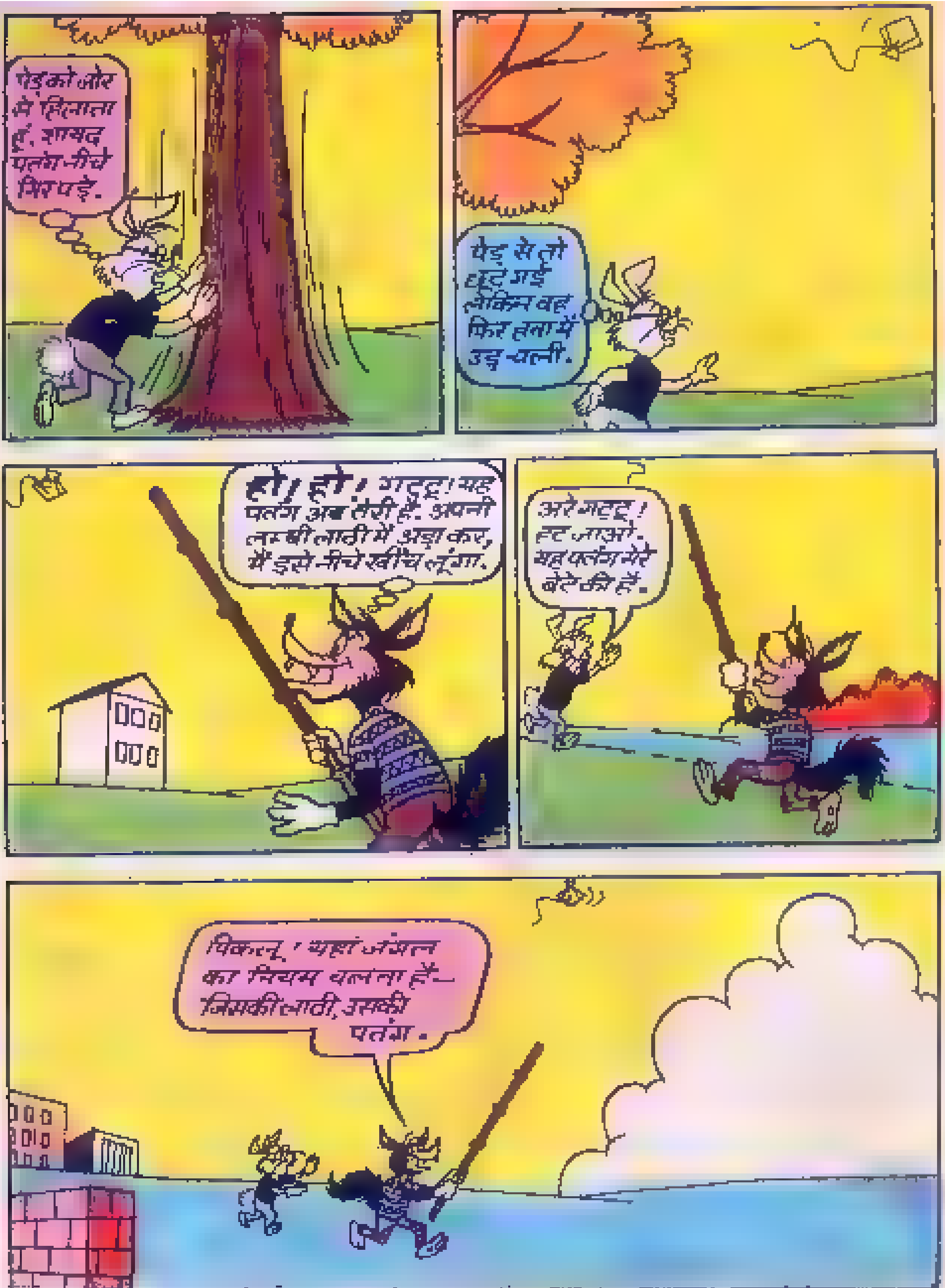
दो तीन हजार! खच्चू, यह तो तू सचमुच बड़ी अच्छी खबर लाया है, जा, उस खरगोश से वह रकम छीन ला. कुछ दिन की अपनी रोटी तो चले,
लेकिन उस्ताद! उस रकम में अपना कितना हिस्सा होगा?
बड़ा लालची हो गया है अच्छा जा. फिफ्टी-फिफ्टी बांट लेंगे.
यह ले मेरी बंदूक. अब देरी मत कर.
हो! हो! अगर तीन हजार की रकम हाथ लगी तो मैं गप्पू को दो हजार ही बताऊंगा इस तरह मुझे गप्पू से दोगुने पैसे मिलेंगे.
वह रहा पिंकलू का घर. मैं उसे अचानक दबोच लूंगा.
बाप रे! राक्षस!


बेटा खच्चू ! भागो !
गप्पू बचाओ ! वहां एक बड़ा डरावना राक्षस बैठा है.
मैं तेरी चाल समझता हूं, तू सारा पैसा खुद हड़पना चाहता है.
नहीं! आ कर खुद देखलो.
ठीक है. अगर तेरी कहानी गलत निकली तो बंदूक की सारी गोलियां तेरे सीने में घुसेड़ दूंगा.
राक्षस ?. यह तो पिकलू है.
पिकलू ! जल्दी से चंदे की रकम मेरे हवाले कर दे, नहीं तो . . .

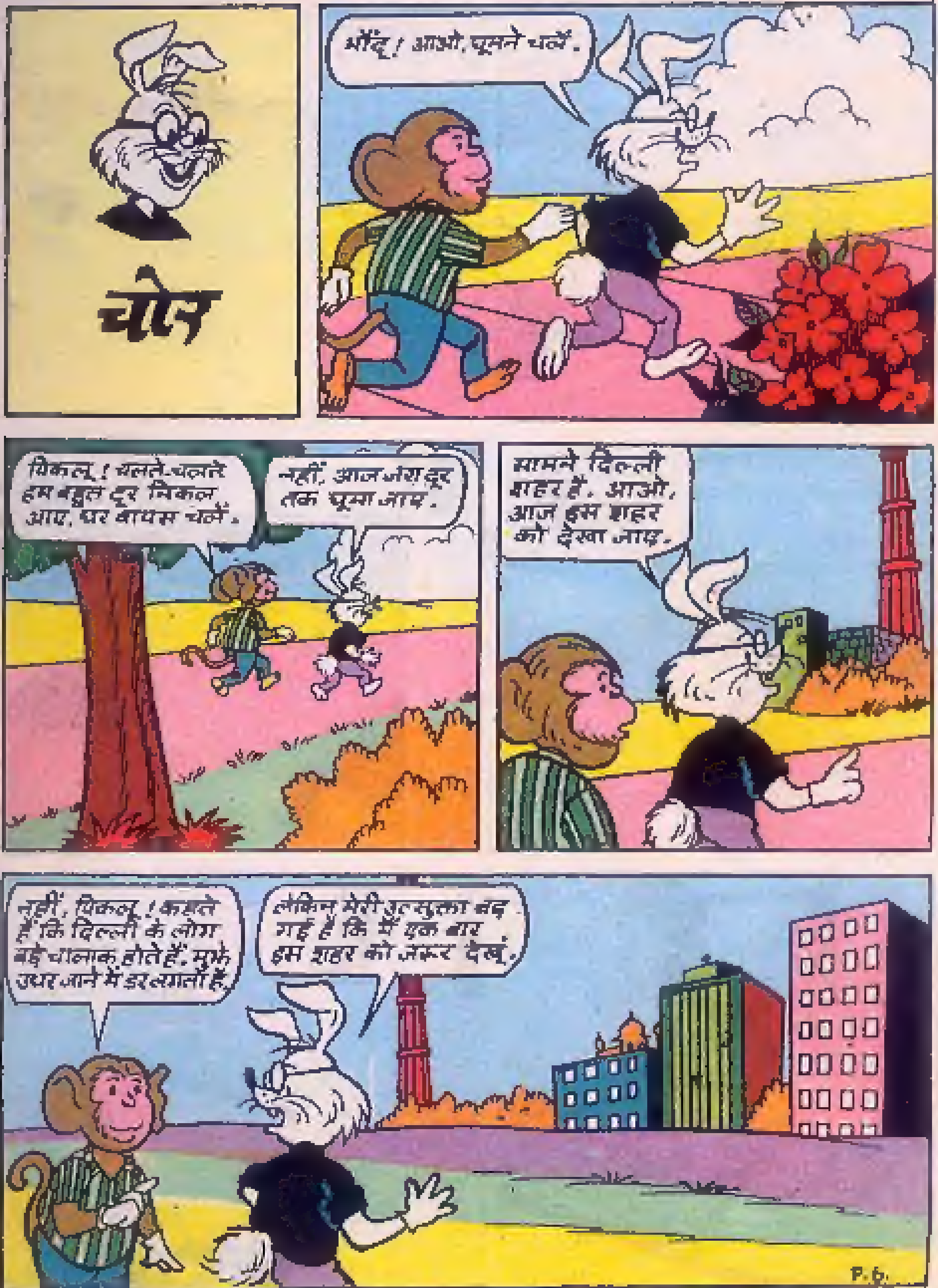

चंदे की सारी रकम खजांची के पास हैं. जाकर उससे ले लो.
बाप रे! राक्षस! चच्चू ठीक ही कह रहा था.
भागो!
हा! हा!
अरे! आखिर वह है कौन पिकलू?
यह रामलीला के लिए कुम्भकरण का सिर हैं. बाकी धड़ वह रहा. जो दो तीन हजार रुपया चंदा इकट्ठा किया हैं, उससे दशहरे पर हम रामलीला करेंगे.
© PRAN'S FEATURES, NEW DELHI-28


पतंग
पापाजी! आओ, पतंग उड़ाएं.
ठीक है लुइक. आज हवा काफी है. पतंग आसमान में खूब ऊंचे जाएगी.
हां, खींचो!
वाह! आज मेरी पतंग बादलों से भी ऊपर जाएगी.
ओह! यह क्या?
मेरी पतंग!
P.21

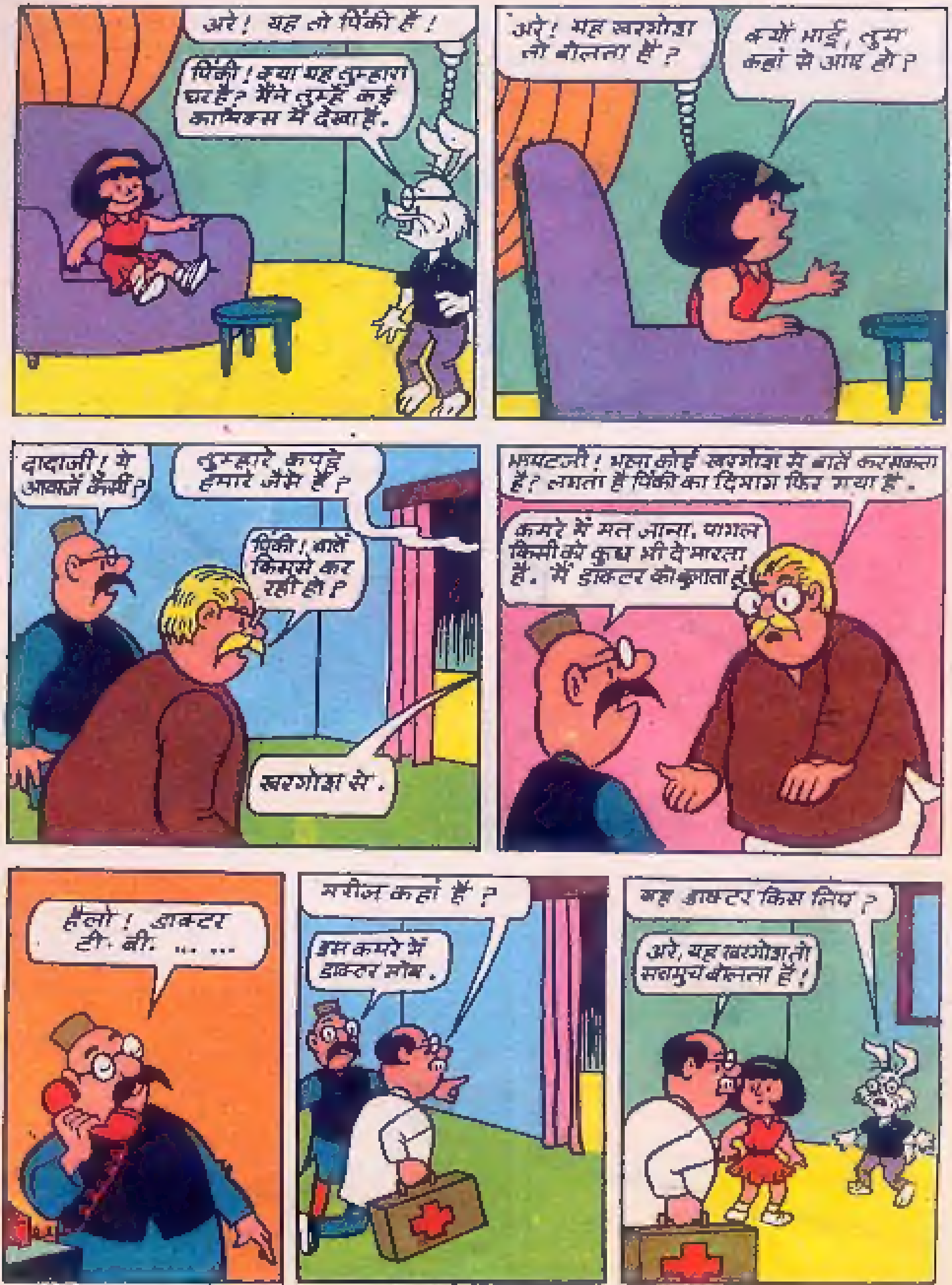

लुढ़कू! रोओ मत, मैं पतंग अभी पकड़ कर लाता हूं.
ओह यह तो हवा के झोंकों से उड़ती ही चली जा रही है.
बाप रे! कभी सोचा भी न था कि एक मामूली पतंग की खातिर मुझे इतनी दौड़ लगानी पड़ेगी.
शुक्र है, वह पेड़ से अटक गई.
लेकिन पतंग को नीचे कैसे लाया जाए? मुझे तो पेड़ पर चढ़ना नहीं आता.


पेड़ को ज़ोर से हिलाता हूं, शायद पतंग नीचे गिर पड़े.
पेड़ से तो छूट गई लेकिन वह फिर हवा में उड़ चली.
हो, हो! गड्डू! यह पतंग अब तेरी है. अपनी लम्बी लाठी में अड़ा कर, मैं इसे नीचे खींच लूंगा.
अरे गड्डू! हट जाओ. यह पतंग मेरे बेटे की है.
पिकलू, यहां जंगल का नियम चलता है— जिसकी लाठी, उसकी पतंग.


हा! हा! वह पतंग नीचे आ रही है. इसकी डोर लाठी में लपेट कर मैं नीचे खींच लूंगा.
सत्यानाश!
शुक्रिया! लो, अपनी पतंग.
PRAN'S FEATURES


चोर
मोंटू ! आओ, घूमने चलें.
चिकलू ! चलते-चलते हम बहुत दूर निकल आए, घर वापस चलें.
नहीं, आज ज़रा दूर तक घूमा जाए.
सामने दिल्ली शहर है. आओ, आज हम शहर को देखा जाए.
नहीं, चिकलू ! कहते हैं कि दिल्ली के लोग बड़े चालाक होते हैं. मुझे उधर जाने में डर लगता है.
लेकिन मेरी उत्सुकता बढ़ गई है कि मैं एक बार इस शहर को ज़रूर देखूं.
P. 6.


चिकलू ! मेरा कहा मानो, घर वापस चलो. दिल्ली आना खतरे से खाली नहीं.
अरे भोंदू ! तू तो बड़ा डरपोक है.
ठीक है, तुम दिल्ली जाओ. मैं तो घर चला
वाह ! क्या ऊंची-ऊंची इमारतें हैं!
लोटन उस्ताद ! यह खरगोश तो बोलता है.
अगर हम इसे पकड़ लें तो बच्चों को तमाशा दिखा कर काफी पैसा कमा सकते हैं. मैं आया अभी.
हा ! हा !
अरे ! वह बदमाश मुझे पकड़ने आ रहा है.
खिड़की खुली है, इस घर में शरण लेनी चाहिए.
आखिर कब तक उस घर में छिपा रहेगा? जब भी बाहर निकलेगा मैं उस खरगोश को दबोच लूंगा.



अरे ! यह तो पिंकी है !
पिंकी ! क्या यह तुम्हारा घर है? मैंने तुम्हें कई कामिक्स में देखा है.
अरे ! यह खरगोश तो बोलता है ?
क्यों भाई, तुम कहां से आए हो ?
दादाजी ! ये आवाजें कैसी ?
तुम्हारे कपड़े हमारे जैसे हैं ?
पिंकी ! बातें किससे कर रही हो ?
खरगोश से .
झपटजी ! भला कोई खरगोश से बातें कर सकता है? लगता है पिंकी का दिमाग फिर गया है .
कमरे में मत जाना, पागल किसी को कुछ भी दे मारता है. मैं डाक्टर को बुलाता हूं .
हैलो ! डाक्टर टी. बी. ... ...
मरीज कहां है ?
इस कमरे में डाक्टर लोब .
यह डाक्टर किस लिए ?
अरे, यह खरगोश तो सचमुच बोलता है !


उस कमरे में एक खरगोश है जो सचमुच बोलता है.
झपटजी! यह डाक्टर भी गया काम से.
भागो! यह डाक्टर पागलपन में कहीं हमें मार्फिया का इंजेक्शन न लगा दे.
अरे! यह बदमाश लोटन यहां क्या कर रहा है? मुझे इसकी कई दिनों से तलाश थी.
चलो!
मगर थानेदार सा'ब! ... ...
चुप!
यही मौका है निकल भागने का.
अरे भौंदू! पता है दिल्ली में मैं पिंकी से मिला.
लगता है पिकलू का दिमाग फिर गया है. पिंकी लोककामिक्स का कलेक्टर है.